an>

Title: Regarding derogatory remarks made by a member outside the Parliament against the Prime Minister.

माननीय अध्यक्ष : मैं सभी सदस्यों से निवेदन करना चाहती हूं। पहली बात यह है कि जो संसद सदस्य हैं, सदन के अंदर भी और सदन के बाहर भी, मैंने पहले भी बताया है, अपनी भाषा पर हमें कंट्रोल रखना ही पड़ेगा। दूसरी बात, माननीय खड़गे जी, जिनके बारे में बोला गया, वह भी सदन के सदस्य हैं। कई बार जब बाहर भी किसी सदस्य का अपमान होता है, कोई अधिकारी ऐसा करता है तो मेरे पास सदस्य के द्वारा प्रिविलेज नोटिस दी जाती है और कहा जाता है कि मेरी रक्षा करो। यह होता आया है कि जब सदन के बाहर भी अगर ऐसी कोई घटना होती है तो कई बार सदस्य मेरे पास आकर बताते हैं कि सदस्य का ऐसा अपमान हुआ है। सदन के बाहर भी हम सोचते हैं। संसद सदस्य, जो प्रजातंत्र में लाखों लोगों का प्रतिनिधित्व करता है, उसका सम्मान सदन के बाहर भी रहे। इसकी अपेक्षा कहीं न कहीं की जाती है, उसी प्रकार वह सदस्य भी यह देखे कि किसी दूसरे सदस्य के बारे में अपमानजनक बात सदन के बाहर नहीं बोलूं, सदन के अंदर भी नहीं बोलूं। यह अपेक्षा करना अस्वाभाविक है, ऐसा मैं नहीं मानती हूं। इसी दृष्टि से मेरा कहना है, मैं बार-बार क्या बोलूं, हमारे एक पूर्व प्रधान मंत्री थे। किसी का बेटा क्या कुछ करता है, उसके कारण यह जरूरी नहीं है कि हम उसके पिता या दादा को कुछ बोलें। ऐसी बातें हम अपने घर में कई बार बताते हैं कि यह ठीक नहीं है। मेरा केवल इतना ही निवेदन है, माननीय सदस्य श्री कल्याण बनर्जी से भी है कि वास्तविकता यह है कि कई बार सदन में भी हमारे द्वारा कई उत्तेजित घोषणाएं दी जाती हैं, जो नहीं दिया जाना चाहिए। हमें अच्छा लगे या नहीं लगे, सामने वाले जीतकर आया है तो प्रजातंत्र में हमें उसका सम्मान करना पड़ेगा। हमें अच्छा लगे या नहीं लगे, सामने वाले व्यक्ति को जनता ने किसी पद पर बैठा दिया है तो हमें उसका सम्मान करना ही पड़ेगा। यह जनता का निर्णय है, कोई हमारा किसी अकेले व्यक्ति का निर्णय नहीं है। एक सदस्य दूसरे सदस्य के बारे में बाहर भी बोलें। आपने सही कहा कि मंत्री को नहीं बोलना चाहिए, उन्होंने माफी मांग ली। उन्होंने भी सदन से बाहर बोला था, उन्होंने किसी व्यक्ति को उल्लेखित नहीं था, तब भी उन्होंने माफी मांगी क्योंकि मंत्री की भी अपनी एक भाषा होनी चाहिए। आपने भी माना, हमने भी माना, सत्तापक्ष ने भी मान लिया। क्योंकि मंत्री की शालीन भाषा होनी चाहिए। आपने माना, हमने माना, इस तरफ से भी इस बात को मान लिया गया कि मंत्री की ऐसी भाषा नहीं होनी चाहिए। जनरली भी गलत भाषा नहीं होनी चाहिए, तो उन्होंने माफी मांगी। सदन के किसी सदस्य के बारे में, सदन के ही किसी सदस्य ने बोला है और पूर्व प्रधान मंत्री के लिए, भले ही उनके पोते के व्यवहार से, मगर यह भी उचित नहीं है। ऐसे रैफरेंसेज, हमारे लिए आज यह साधारणतः बात हो गयी है, लेकिन ऐसे रिमार्क्स नहीं आने चाहिए, भले ही हम चुनाव में भाषण क्यों न दें। अगर हम लोगों का नेतृत्व करते हैं तो हमसे लोग शालीन भाषा की अपेक्षा करेंगे। मेरा माननीय कल्याण बनर्जी से निवेदन है कि माफी मांगने से कोई छोटा नहीं होता। कई बार गुस्से में हमारे मुंह से बहुत सारी बातें, जो नहीं निकलनी चाहिए, निकल जाती हैं। मैं मानती हूं कि भाषण देते समय ऐसा होता है कि मैं विपक्ष पर कितना बरसूं। ऐसा कई बार लगता है, चाहे वह चुनावी सभा हो या दूसरी कोई सभा हो। मेरा निवेदन है कि अगर गलती से हमारा किसी को पैर लगता है, तो हम सॉरी बोलते हैं। अगर अनजाने में कोई गलती होती है तो हम सॉरी बोलते हैं। आपने बोला है कि आपकी मंशा नहीं थी, अगर आपकी मंशा किसी का दिल दुखाने की नहीं थी, तो मेरा आपसे निवेदन है कि एक वाक्य और आगे भी बोलें कि मेरी किसी का दिल दुखाने की मंशा नहीं थी। अगर कोई हर्ट हुआ, तो दो शब्द सॉरी के बोलने में कोई आपत्ति नहीं होनी चाहिए, ऐसा मेरा आपसे निवेदन है। मैं जबरदस्ती नहीं कर सकती और जैसा कल मैंने कहा कि पश्चाताप जबरदस्ती की चीज नहीं होती है। हम सभी को अपना व्यवहार ठीक रखना चाहिए, क्योंकि हमारी तरफ लाखों लोग देख रहे हैं और अपनी कांस्टीट्यूएंसी के भी लाखों लोग हमारे व्यवहार को देखकर सीखेंगे।